# मस्त्य पालन में मत्स्य बीज की गुणवत्ता महत्वपूर्ण

पंतनगर। 25 सितम्बर, 2009। विष्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में आयोजित 14 दिवसीय 'मत्स्य बीज उत्पादन' विषयक राष्ट्रीय प्रषिक्षण कार्यक्रम कल सायं सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेषालय, भीमताल के निदेषक डा. पी.सी. महंता थे। अपने व्याख्यान में डा. महंता ने मत्स्य बीज उत्पादन के इतिहास तथा वर्तमान स्थिति का वर्णन किया तथा प्रषिक्षणार्थियों का आह्वान किया कि वह प्रषिक्षण में अर्जित किये गये ज्ञान का अपने तालाबों में उपयोग कर राष्ट्र को मत्स्य बीज उत्पादन में आत्म निर्भर बनायें।

विषिष्ट अतिथि पंतनगर विष्वविद्यालय के कुलसचिव डा. के.के. सिंह ने मत्स्य उत्पादन बढाकर प्रोटीन की आवष्यकता पूरी करने की बात कही। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. ए.पी. शर्मा ने मत्स्य बीज उत्पादन में नवोन्मेषी विचारों का उपयोग करने पर बल देते हुए कहा कि मत्स्य बीज सफल मत्स्य पालन का आधार है। उन्होंने मत्स्य पालन के लिए मछली की नई जातियों को चुनने का भी विचार रखा। प्रषिक्षण की विस्तृत आख्या समन्वयक डा. आर.एस. चौहान ने प्रस्तुत की। समारोह में प्रषिक्षणार्थियों ने अपने विचार रखते हुए प्रषिक्षण के संचालन की प्रषंसा की तथा भविष्य में इस प्रकार के अन्य प्रषिक्षणों के आयोजनों की आवष्यकता बताई। समारोह का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. मालविका दास द्वारा किया गया।

सितम्बर 11 से 24, 2009 तक आयोजित किये गये प्रषिक्षण का वित्त पोषण राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा किया गया। इस प्रषिक्षण में गुजरात, उत्तर प्रदेष तथा उत्तराखण्ड के प्रषिक्षणार्थियों ने भाग लिया। प्रषिक्षण में मत्स्य बीज उत्पादन के व्यावहारिक आयाम पर विषेष ध्यान दिया गया।

समापन समारोह में सम्बोधित करते डा. पी.सी. महंता